❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

ज्ञान ज्योति महोत्सव
महासम्पर्क अभियान
महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जयंती के अवसर पर न्यूनतम 200 महानुभावों से संपर्क करने का संकल्प लीजिए
अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड करें

वर्ष 47, अंक 22 — एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 अप्रैल, 2024 से रविवार 21 अप्रैल, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 — सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 — पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये — दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती 200वीं जयन्ती 1824-2024

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में

149वां आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न

नए अन्दाज से हुआ 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष का शुभारम्भ

परिवर्तन आता नहीं लाया जाता है - सुरेन्द्र रैली, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

वेद परिवार निर्माण एवं ज्ञान ज्योति महासम्पर्क अभियान के लिए दिल्ली में होंगी क्षेत्रीय गोष्ठियां - विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली सभा

आर्यसमाज की वर्तमान कार्यशैली, प्रबन्धन, आवश्यकता, चुनौतियों एवं समाधान के सम्बन्ध में लिया गया फीडबैक

महासम्पर्क अभियान हेतु 1 परिवार-200 व्यक्ति का लक्ष्य निर्धारित

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य इसके स्थापना काल से ही रहा है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने 1875 में मुंबई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। तब से लेकर अब तक आर्य समाज निरंतर राष्ट्र और मानव सेवा के मूल मंत्र को लेकर आगे बढ़ रहा है। इसी भावना और कामना को साकार करने हेतु, अपने उज्ज्वल अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्य की नई सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करते हुए 9 अप्रैल 2024 को आर्य समाज का 149वाँ स्थापना दिवस अम्बेडकर इंटरनेशनल आडिटोरियम नई दिल्ली में एक भव्य समारोह के रूप में संपन्न हुआ। इस प्रेरक कार्यक्रम का सुंदर आयोजन आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में किया गया। जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के सभी वेद प्रचार मण्डलों, आर्य वीर दल, वीरांगना दल और लगभग सभी आर्य समाजों के, अन्य आर्य संगठनों के अधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ ईश्वर स्तुति प्रार्थना के मंत्रों का पाठ करके किया गया। इस अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन का विशेष विहंगम दृश्य देखकर सभी आर्यजन गदगद हो गए, जिसमें दिल्ली के लगभग सभी संगठनों के अधिकारी एक मंच पर उपस्थित हुए और सामूहिक रूप से दीप प्रज्ज्वलित किया गया।

- जारी पृष्ठ 4-5 पर

आर्यसमाज कालीकट एवं महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउंडेशन का निरीक्षण

मोपला विद्रोह के उपरान्त हुई थी आर्यसमाज कालीकट की स्थापना

भारत के दक्षिण पश्चिमी सीमा पर अरब सागर के निकट पर्वत श्रृंखलाओं के बीच केरल राज्य से आर्य समाज का बहुत गहरा और ऐतिहासिक नाता है। यही वह भूमि है जहां 1921 में मोपलाओं ने बहुत बड़ा विद्रोह किया था। उस समय

- जारी पृष्ठ 5 पर

आचार्य एम.आर. राजेश जी को परिवर्तन पुस्तक भेंट करते श्री विनय आर्य जी साथ में हैं डी.ए.वी. के अधिकारी डॉ. वी. सिंह जी, श्री वी.के. चोपड़ा जी एवं श्रीमती मीनू अग्रवाल जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 21 अप्रैल, 2024 सायं : 3:00 बजे

आर्य प्रगति स्कॉलरशिप वितरण समारोह
रविवार 21 अप्रैल, 2024 सायं : 6:00 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक **रविवार 21 अप्रैल, 2024** को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में **सायं 3:00 बजे** से तथा इसके उपरान्त सायं 6 बजे से आर्य प्रगति स्कॉलरशिप वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया है। अत: सभी सम्मानीय सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें छात्रवृति प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को आशीर्वाद भी प्रदान करें।

आर्य प्रगति छात्रवृति योजना के विषय में अधिक जानकारी के लिए दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य (प्रधान) — विनय आर्य (महामन्त्री)

देववाणी-संस्कृत

उत्तम गुण मुझमें आएं

वेद-स्वाध्याय

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः।। अथर्व० 2/35/5
ऋषिः **अङ्गिराः।।** देवता : **विश्वकर्मा।।** छन्दः **भुरिक्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **यज्ञस्य** = मनुष्य-जीवन-यज्ञ के **प्रभृतिः** = भरण-पोषण का साधन **चक्षुः** = दर्शनशक्ति है **मुखं च**=और मुख भी है। **वाचा श्रोत्रेण मनसा** = वाणी से, कान से और मन से **जुहोमि** = मैं हवन ही करता हूँ। **इमम् यज्ञम्** = यह मेरा जीवन-यज्ञ **विश्वकर्मणा** = जगद् रचयिता परमात्मा ने **विततम्** = विस्तृत किया है, इसमें **देवाः** = सब देव, दिव्यभाव **सुमनस्यमानाः** = प्रसन्न होते हुए **आ यन्तु** = आएँ।

विनय - मेरे जीवन-यज्ञ का भरण-पोषण करनेवाली मेरी दर्शनशक्ति है। इससे नित्य नया सत्यज्ञान पाता हुआ मेरा मनुष्य-जीवन उन्नत होता जा रहा है। इस यज्ञ का साधनभूत जो मेरा स्थूल शरीर है, उसका भरण-पोषण मुँह द्वारा अन्न ग्रहण करने से हो रहा है, पर मेरा यह सब मानसिक और शारीरिक पोषण यज्ञ के लिए ही है। मैं उन्नत हुए मन से, शरीर से, इन्द्रियों से जो कुछ करता हूँ वह सब हवन ही करता हूँ। वाणी से जो बोलता हूँ वह हवन ही करता हूँ; ऐसा कुछ नहीं बोलता जो प्रभु को साक्षी रखकर नहीं होता, जोकि अन्यों का हितकर नहीं होता। कानों से जो सुनता हूँ वह प्रभु-अर्पण-बुद्धि से सुनता हूँ; वह श्रेष्ठ पवित्र ही श्रवण करता हूँ, जो फलतः सर्वभूतहित के लिए हो। इसी प्रकार मन के भी एक-एक मनन-चिन्तन को ऐसा पवित्र, निर्विकार, हवनरूप करने का यत्न करता हूँ। मैं सदा स्मरण रखता हूँ कि यह मनुष्य-जीवन मुझे विश्वकर्मा प्रभु ने यज्ञ रूप करके दिया है। मुझे यह ध्यान रहता है कि यह जीवन यज्ञ उस प्रभु का आरम्भ किया हुआ, चलाया हुआ है। जिस यज्ञस्वरूप ने यह सब विश्व-ब्रह्माण्ड रचा है, उसी विश्वकर्मा ने अपने इस विश्व में मेरा यह छोटा-सा जीवनयज्ञ भी शतवर्ष तक चलने के लिए प्रारम्भ किया है। यही विचार है जो मुझे अपने एक-एक कर्म को संयम पूर्ण, पवित्र और त्यागमय बनाने को प्रेरित करता है। मैं सचिन्त और सावधान रहता हूँ कि कहीं यह विश्वकर्मा का विस्तृत किया हुआ पवित्र यज्ञ मेरे किसी कर्म से कभी भ्रष्ट न हो जाए। इसलिए, हे देवो! प्रभु के संसार-यज्ञ को चलाने वाली दिव्य शक्तियो! तुम मेरे इस यज्ञ में भी प्रसन्नचित्त होकर आओ और इसे अधिक - अधिक यज्ञिय, पवित्र बनाओ। तुम्हारा तो कार्य ही यज्ञ में आना है, अतः हे दिव्य गुणो! तुम मुझमें आओ, प्रसन्नचित्त होकर आओ। मैं अपने जीवन को यज्ञ बनाता हुआ तुम्हें बुला रहा हूँ, अतः हे यज्ञप्रिय दैवभावो! तुम प्रसन्नतापूर्वक मुझमें वास करो। देवों के सब गुण, सब देवभाव, सब देवत्व मुझमें आ जाएँ, स्वभावतः मुझमें आ जाएँ, मुझमें बस जाएँ।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

युनाईटेड किंग्डम - ग्रेट ब्रिटेन के सर्वोच्च चर्च 'चर्च ऑफ इंगलैंड' में इफ्तार पार्टी का मामला

क्या ब्रिटिश राज का सूरज हमेशा के लिए अस्त होने वाला है?

19वीं शताब्दी के ओपनैवेशिक काल में कहा जाता था - यूनियन जैक का सूर्यास्त कभी नहीं होता

पिछले दिनों चर्च ऑफ इंग्लैंड के इफ्तार पार्टी चल रही थी। सवाल है कि ब्रिटेन की 3000 से अधिक मस्जिदें पर्याप्त नहीं रही जो इस्लामिक इफ्तार पार्टी चर्च ऑफ इंग्लैंड के अन्दर देनी पड़ रही है? लोगों ने कहा कि इंग्लैंड का चर्च इस्लामवाद की भेंट चढ़ चुका है।

कभी आधी दुनिया पर राज करने वाले ब्रिटिश अब अपने घर में ही निराश हैं, उनकी निराशा का कारण है ब्रिटेन में बढती मुस्लिम जनसँख्या। जहाँ लन्दन के अन्दर की एक रैली में हमास आतंकवादी-अबू ओबैदा की प्रशंसक भीड़ सड़कों पर अल-दीन अल-कसम-आतंकवादी का महिमामंडन कर रही है। इससे साफ पता चलता है कि ब्रिटेन अन्दर ही अन्दर खोखला हो चुका है। खुलेआम आतंकवादियों का महिमामंडन किया जाता है और महिलाओं का बिना 'नकाब' और 'हिजाब' देखे बिना घर से निकलना मुश्किल है। शुक्रवार को, मुस्लिम मस्जिदों से निकलकर सड़क के किनारों पर आ जाते हैं। पूर्वी लंदन का कुछ क्षेत्र ऐसा है कि मेलिसा और माइकल की तुलना में वहां के स्कूल रजिस्टर में मुहम्मद और आफिसा जैसे नामों को कहीं अधिक बार बुलाया जाता है। 2021 की राष्ट्रीय जनगणना के अनुसार, ब्रिटेन में 3.9 मिलियन मुस्लिम हैं और इनमें से 1.3 मिलियन लंदन में रहते हैं।

ब्रिटेन के लोगों को इस बात का अनुमान हुआ, साल 2005 में। जब मुस्लिम प्रॉपर्टी के अध्यक्ष आसिफ अजीज ने लंदन के वेस्ट एंड के मध्य में प्रतिष्ठित ट्रोकाडेरो इमारत खरीदी। यह लन्दन की प्रसिद्ध इमारत थी। फिर धीरे-धीरे इसमें नमाज शुरू कर दी। साल 2020 में तो इमारत के एक हिस्से को मस्जिद में बदलने की योजना बना डाली, जिससे खुश होकर मुस्लिम समुदाय ने खूब जश्न मनाया। जब यह हुआ तो वहां के एक ईसाई समूह 'ब्रिटेन फर्स्ट' ने एक मस्जिद के निर्माण के खिलाफ एक याचिका डाली। कुछ दिन काम रुक गया। लेकिन अब मस्जिद की योजना आखिरकार आगे बढ़ रही है। इसके अलावा वेस्टर्मिस्टर में मजहब विशेष को मानने वालों की संख्या हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ी है - 2011 में 12 फीसदी से बढ़कर 2021 में लगभग 15 फीसदी हो गई ।

इतना ही नहीं पाकिस्तानी मूल के मुस्लिम ब्रितानी लडकियों को अपना शिकार बना रहे हैं। इन्हें वहां ग्रूमिंग गैंग्स कहा जाता है। अर्थात-वो गिरोह जो गैर मुस्लिम लड़कियों को बहला-फुसलाकर उनका यौन शोषण करते हैं या उनकी तस्करी कर देते हैं। जिस कृत्य को भारत में लव जिहाद कहा जाता है वहां इसे ग्रूमिंग जिहाद कहा जाता है।

ब्रिटेन की संसद तक गूंजा ये जिहाद रिपोर्ट्स के अनुसार साल 1997 के आसपास शुरू हुआ जो आज भी चल रहा है। ग्रूमिंग जिहाद के हर केस में एक ही आम बात है, पकड़ा गया हर आरोपी पाकिस्तानी मूल का होता था। इसमें भी ज्यादातर शिकारी टैक्सी चालक है वे स्कूलों, केयर सेंटर और घरों में अकेले रहने वाली बच्चियों को निशाना बनाते थे। महंगी गाड़ियों में लिफ्ट, पार्टी, घूमने-फिरने का लालच देते। लड़की को पहले बाकायदा भरोसे में लेते थे। उसके बारे में हर जानकारी निकलवाते ब्लैकमेल करते हैं और फिर उन्हें वेश्यावृत्ति की ओर धकेल देते या दूसरे शहरों या देशों में बेच देते।

.....लंदन का तेजी से बढ़ता मजहबीकरण लगभग पूरा हो गया है, राजधानी में सैकड़ों आधिकारिक शरिया अदालतें चल रही हैं, और मस्जिदें खुल रही हैं। मौलाना सैयद रज़ा रिज़वी जैसे लोग है जो अब खुलेआम लंदनिस्तान बनाने की घोषणा कर रहे है। क्योंकि लंदनिस्तान, 423 नई मस्जिदों के साथ, ईसाई धर्म के चर्च के खंडहरों पर बनाया जा रहा है या लंदन में कई प्रतिष्ठित ईसाई चर्चों को मस्जिदों में बदल दिया गया है। गेटस्टोन इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट कहती है कि हयात यूनाइटेड चर्च को मिश्र समुदाय द्वारा मस्जिद में परिवर्तित करने के लिए खरीदा गया था। सेंट पीटर चर्च को मदीना मस्जिद में बदल दिया गया है। ब्रिक लेन मस्जिद एक पूर्व मेथोडिस्ट चर्च पर बना गई थी। न केवल इमारतें परिवर्तित होती हैं, बल्कि लोग भी परिवर्तित होते हैं। इस्लाम में धर्मान्तरित होने वालों की संख्या दोगुनी हो गई है, जिनमें लगभग आधे ब्रिटिश मुसलमान 25 वर्ष से कम आयु के हैं, ...

थोड़े समय पहले इंग्लैंड के दक्षिण यॉर्कशर के रॉदरहैम शहर में ब्रिटिश इतिहास का सबसे बड़ा यौन उत्पीड़न कांड हुआ था, जिसमें संगठित तरीके से पूरे शहर में अंग्रेज लड़कियों को निशाना बनाया गया। पहले दोस्ती का झांसा, फिर नशे की लत और आखिर में बलात्कार। एक-दो नहीं, करीब 14 सौ लडकियों के साथ यह सब किया गया और पीड़िताओं की उम्र 16 साल तक पाई गई और विडम्बना हर एक केस में पाकिस्तानी पकड़े जाते रहे।

सबसे पहले ब्रिटेन के अख़बार द टाइम्स के एक रिपोर्टर एंड्रयू नॉरफॉक ने 2003 में रॉदरहैम शहर की इन घटनाओं का खुलासा किया। बवाल मचा यूरोप के टीवी चैनल चिल्लाये पीड़ित लड़कियों के धड़ाधड़ इन्टरव्यू होने लगे वो अपने दुखड़े सुनाती लोग द्रवित होते। लेकिन दो बातों ने पुलिस के हाथ बांध दिए, एक तो सबूत न होना और दूसरी राजनीतिक बंदिशें। पाकिस्तानी रेप कर रहे थे तो वामपंथी उन्हें बचाने में उतर गये। पुलिस पर रंगभेद के आरोप लगाये जाने लगे। अल्पसंख्यक का विक्टिम कार्ड खेला जाने लगा। इस्लामोफोबिया का एजेंडा सेट कर दिया गया। ग्रूमिंग जिहादियों के बचाव में वहां के पाकिस्तानी उतरने लगे। - ***जारी पृष्ठ 7 पर***

जन्मोत्सव 19 अप्रैल पर विशेष स्मरण

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर आर्य जगत् के त्यागी, बलिदानी और समर्पित महापुरुषों की गाथा

अशिक्षित भारत को शिक्षा का मार्ग प्रदान करने वाले महात्मा

दिल्ली यूनिवर्सिटी के बारे में शायद ही कोई होगा जो नहीं जानता होगा। हर साल कट ऑफ लिस्ट नये छात्रों के लिए खुशी और गम दोनों लेकर आती है। कोई फेसबुक पर अपने नए कॉलेज के बारे में लिखता है, कोई मनपसंद कोर्स न पाकर करियर प्लान बदलता है। दिल्ली यूनिवर्सिटी में घुसने की दौड़ इसलिए हैं क्योंकि माना जाता है कि यहां के कॉलेज बेस्ट होते हैं। युनिवर्सिटी के कॉलेजों में एक कॉलेज है हंसराज कॉलेज।

आज अपने मन में सोचिये क्या कोई एक साधारण सा इंसान किसी देश में असंख्य स्कूल और कॉलेज खड़े कर सकता है? या एक इन्सान किसी गुलाम देश में स्कूल कालेजों के माध्यम से क्रांतिकारियों की फौज खड़ी कर सकता है!! खूब सोचने, समझने, चर्चा करने और गूगल तक सर्च करने के बाद एक नाम निकलकर सामने आता है वो है महात्मा हंसराज। इन्हीं महापुरुष महात्मा हंसराज जी की स्मृति में डीएवी मतलब दयानंद एंग्लो-वैदिक स्कूल प्रबन्ध समिति ने आज़ादी के ठीक एक साल बाद बनाया था हंसराज कॉलेज, जो बाद में दिल्ली यूनिवर्सिटी में सम्मिलित हुआ।

अब मन में प्रश्न उठ सकता है कि डीएवी वालों को क्या पड़ी थी कि किसी एक नाम से दिल्ली के अन्दर इतना बड़ा कालेज बनाने की, तो ये किस्सा अपने बच्चों भी जरुर सुनाइए। दरअसल 1 जून 1886 को लाहौर में डीएवी स्कूल शुरू किया गया था। यह देश का पहला डीएवी स्कूल था। महात्मा हंसराज जी इसके हेडमास्टर थे। महात्मा हंसराज जी आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती जी के बड़े अनुयायी थे। हंसराज जी, लाला लाजपत राय के अच्छे दोस्त थे और आज़ादी की लड़ाई में दोनों कंधे से कंधा मिलाकर लड़े थे। ना केवल लड़े बल्कि बाद में डीएवी स्कूलों में आजादी के सिपाही भी तैयार करने लगे। भारत की आजादी के कई क्रांतिकारी इसी स्कूल से पढ़े और इसमें शहीद भगत सिंह भी शामिल हैं।

आर्य समाज के त्याग, बलिदान और समर्पण से देश को आजादी मिली। साथ में मिला बंटवारा। लाहौर वाला डीएवी पाकिस्तान के हिस्से चला गया तो 19 अप्रैल 1955 को चंडीगढ़ सेक्टर 8 में इसकी पुनः स्थापना हुई और शहर के टॉप मोस्ट स्कूलों में शुमार हुआ। स्पोर्ट्स हो या एकेडेमिक्स इस स्कूल के स्टूडेंट्स ने हर जगह अपनी जगह बनाई। विश्व कप विजेता कपिल देव, योगराज सिंह, युवराज सिंह, वीआरवी सिंह इसी स्कूल से पढ़े और शहीद कैप्टन संदीप सागर भी इसी स्कूल के थे। इसके अलावा हाईकोर्ट के कई जस्टिस इस स्कूल के एल्युमनी हैं।

एक सपना जो लाहौर में महात्मा हंसराज जी ने देखा था बाद दुनिया का सबसे बड़ा गैर-सरकारी शैक्षणिक संगठन बना। देश भर में फैले दयानंद आंग्ल वैदिक स्कूलों और कॉलेजों की आज इतनी बड़ी श्रृंखला है कि किसी गरीब देश का शिक्षण मंत्रालय भी ऐसा सपना नहीं देख सकता। आज तक इसमें 600 से अधिक कॉलेज, स्कूल, पेशेवर और तकनीकी संस्थान हैं। लाखों लड़के और लड़कियाँ अपने करियर का श्रेय इस बहुआयामी व्यवस्था को देते हैं। मानो या न मानो, वे अपनी उपलब्धियों और रुतबे का श्रेय एक बहुत ही मामूली साधन वाले एक कमजोर युवक को देते हैं, जिसने अपना पूरा जीवन शिक्षा के लिए समर्पित करने का फैसला किया। वह एक छोटे से बीज की तरह थे, जिसमें से एक शक्तिशाली बरगद का पेड़ उग आया, जिसने अपनी शाखाओं को गिराकर और अधिक बरगद उगाए, जब तक कि उन्होंने पूरे देश को शिक्षा संस्कार से कवर नहीं कर लिया। वो युवक था हंसराज जिसने गरीब अशिक्षित भारत को अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले गये।

अब आप सोच रहे होंगे कि पास में पैसा होगा या पॉवर होगी, तभी तो इतना बड़ा कार्य कर सका? लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है बस मन में होसला था समर्पण और उम्मीद थी। लक्ष्य पवित्र था कि मुगलों द्वारा अनपढ़ बनाये गये भारत को फिर से शिक्षित करना है।

दरअसल पंजाब के होशियारपुर जिले में एक छोटा सा शहर था बजवाड़ा। इसी बजवाड़ा में साल 1864 में एक बच्चे का जन्म हुआ था। माता-पिता ने नाम रखा हंसराज लेकिन उस बच्चे हंसराज की किस्मत कुछ ऐसी रही कि 12 साल की उम्र से पहले ही उन्होंने अपने पिता को खो दिया। हंसराज जी की देखभाल परवरिश और पढाई की जिम्मेदारी सम्हाली उनके बड़े भाई मुलकराज जी ने। किन्तु उसी दौरान उनके परिवार को लाहौर जाना पड़ा। वहां जाकर हंसराज जी को एक मिशनरी स्कूल में एडमिशन दिला दिया। किन्तु वो स्कूल पादरी चलाते थे, जिसमें हिन्दुओं की पूजा पद्धति, जातिप्रथा, छुआछूत आदि कई सारी कुप्रथाओं को लेकर कभी अक्सर मजाक तक बनाया जाता था।

हंसराज जी इसे लेकर बड़े दुखी होते उन्हें नहीं पता था कि उनके बारे में क्या करना चाहिए? परन्तु अचानक एक दिन उन्हें स्वामी दयानंद सरस्वती के आह्वान का पता चला, जिसमें स्वामी दयानंद की वेदों की ओर वापस जाकर आर्य हिन्दू धर्म को पुनर्जीवित करने की प्रेरक अपील

- शेष पृष्ठ 7 पर

डीएवी कॉलेज खोल दिए, शिक्षा की ज्योत जगाने को

ओ मानसरोवर के राजहंस, जगति का तिमिर मिटाने को
डीएवी कॉलेज खोल दिए, शिक्षा की ज्योत जगाने को

ओ दयानन्द के परम भक्त, डीएवी कॉलेज के सेनानी
तेरा असीम ताप तेज देख खींचे आए अनगणित प्राणी
फिर किसका साहस रोक दिए उस हिम्मत के परवाने को,
डीएवी कॉलेज खोल दिए, शिक्षा . ...

ओ आर्य जाति के अमर पत्रु, पंजाब देश के महान संत
तेरी वाणी से गूंज उठे, पृथ्वी आकाश और दिशा दिशतं
शुद्धि का डंका बजा दिया, दलितों के कष्ट मिटाने को,
डीएवी कॉलेज खोल दिए, शिक्षा . ...

ओ सत्य निष्ठ, ओ कर्मयोगी, ओ महा सरल, ओ नम्र धीर
ओ न्याय प्रिय, ओ तेजस्वी, पर दुख को समझ के अपनी पीर
तमु सदा ही उद्यत रहते थे, अपना सर्वस्य लुटाने को,
डीएवी कॉलेज खोल दिए, शिक्षा . ...

- डॉ. ईश नारंग

स्वास्थ्य रक्षा

उत्तम स्वास्थ्य के सूत्र एवं रोगों से बचाव

आर्य सन्देश के इस अंक में स्वास्थ्य रक्षा स्तंभ में हम आपको बता रहे हैं कुछ वे उपयोगी प्रचीन नुस्खे जिनको अपनाकर आप जटिल बीमारियों से स्वयं को ओर अपने परिवार स्वस्थ रख सकते हैं। लेकिन हम यहां पर यह अवश्य स्पस्ट करना चाहते हैं कि ये पुराने वैद्यों द्वारा प्रचलित घरेलू नुस्खे हैं, अतः अगर किसी को कोई खतरनाक बीमारी हो तो कृपया अपने चिकित्सक का परामर्श और उपचार ही प्रयोग में लाएं और स्वस्थ रहें। - सम्पादक

यकृत एवं पित्ताश्य की पथरी (Gall Bladder Stone)-

1. बादाम छः नग, मुनक्का छः नग, मगज (खरबूजा बीज) 4 ग्राम, छोटी इलायची 2 नग, मिश्री 10ग्राम, पांचों को ठंडाई की तरह बारीक घोटकर आध कप पानी में मिलाकर छानकर पीवें, चमत्कारी लाभ होगा। 2. अमरूद 4 पत्ते का काढ़ा सुबह लेवें, त्रिफला चूर्ण 1 चम्मच गर्म पानी के साथ सोते समय। 3. 50ग्राम कुल्थीदाल का सेवन करें। गर्म पानी पीवें।

मुद्रा-अपानवायु मुद्रा 15 से 20 मिनट।

पित्ताशय पथरी दर्द-

चावल, पालक, दूध के सामान, चूना, टमाटर, आम आदि कैल्शियम वाले पदार्थ न लेवें।

पिसी सोंठ 100ग्राम + 1 ग्राम काला नमक गर्म जल में लेने से आराम मिलता है। गाजर रस 100ग्राम पिलावें, मूली रस पिलावें।

पथरी-

1. गेंदे के पत्ते का रस या 10ग्राम काढ़ा सुबह-शाम एक माह तक लेवें। 2. मूली पत्ते का रस 40ग्राम सुबह खाली पेट लेवें।

3. नीम की छः छः पत्तियां 50ग्राम पानी में पीसकर खाली पेट लेवें, सुबह-शाम। 4. नीम की सूखी पत्तियों का राख बनाकर 20ग्राम राख का सेवन कों 3-4 दिन तक।

विशेष- कुल्थीदाल 50ग्राम 1 लिटर पानी में भिगा दें सुबह धीमी-धीमी आग में लगभग 4 घण्टे पकायें, 250ग्राम पानी शेष रहने पर देसी घीं का छोंक लगायें। छोंक में सैंधा नमक, कालीमिर्च, जीरा, हल्दी डालें। 1-2 माह तक दोपहर में।

5. पत्थर चट्आ 3 पत्ते खाली पेट चबाएं, तथा प्याज का रस 20 मि.लि. ताला रस दिन में तीन बार 90 दिनों तक लेवें।

6. अमरूद के 5 पत्ते शाम को खावें + काढ़ा बनाकर कैल्शियम युक्त भोजन न खाएं।

7. 30ग्राम गेंदे पत्ते का काढ़ा बनाकर सुबह-शाम 1 माह तक सेवन करें।

निषेध- पालक, टमाटर, बैंगन, चॉवल, उडद, सूखे मेवे, चाय, चीनी, नमकीन, मैदा, मांस, अण्डा।

पथ्य- कुल्थीदाल, मूली, आंवला, जौ, मूंग, 6-8 गिलास पानी पिवें, आंवला, लौकी, करेला।

जलोदर-(Ascites)

दुबी का रस 10ग्राम + कालीमिर्च 2नग, पीसकर पीलाने से ठीक होता है- दिन में 3 बार पीलाने से तुरन्त ठीक होता है। प्याज रस 10ग्राम + पानी दिन में 4-4 बार पीलाने से ठीक होता है। लहसुन रस 1 चम्मच 125ग्राम पानी मिलाकर दिन में 3 बार पीलाने से ठीक होता है। सूरज-सिरस की छाल का काढ़ा पीलाने से जलोदर सूजन उतरता है।

- जारी अगले अंक में

प्रथम पृष्ठ का शेष

149वां आर्यसमाज स्थापना दिवस सम्पन्न

अम्बेडकर इंटरनेशनल सैन्टर जनपथ में आयोजित 149वें स्थापना दिवस पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के शिष्यों द्वारा भावांजलि समर्पण एवं विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं द्वारा संस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा ने आर्य समाज के स्थापना काल से पूर्व महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उस काल खंड को स्मरण किया जब उन्होंने वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार प्रसार में अनेक अवरोधों को पार करते हुए मानव समाज को सुदिक्षा देने का कार्य किया। इसके उपरांत आर्य वीर दल और आर्य विद्या परिषद के छात्र-छात्राओं ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते हुए एक सुंदर नाटिका का मंचन किया। जिसमें स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, पंडित लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, राम प्रसाद बिस्मिल और अनेक महापुरुषों का चरित्र चित्रण करने वाले, महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुयाइयों द्वारा दयानन्द को धन्य बताते हुए यह सिद्ध किया कि किस तरह से महर्षि की प्रेरणा से उनके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आया। इस नाटिका को देखकर, समझकर सभी आर्य नेता, अधिकारी मंत्रमुग्ध हो गए और महर्षि दयानंद सरस्वती का जय-जयकार करने लगे। एस एम आर्य पब्लिक स्कूल के छात्र छात्राओं ने एक है ईश्वर सांस्कृतिक कार्यक्रम की सुंदर प्रस्तुति दी। आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली जीने कार्यक्रम में आए सभी आर्यजनों नववर्ष और आर्य समाज स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए बताया कि सृष्टि संवत, विक्रम सम्वत, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज्याभिषेक, आर्य समाज का स्थापना दिवस और अन्य कई पर्व नव वर्ष से जुड़े हुए हैं। आपने बताया कि आर्य समाज का स्थापना दिवस ही आर्य समाज का जन्मोत्सव है। आर्य समाज का 150 या स्थापना वर्ष प्रारम्भ हो गया है और जिस समय आर्य समाज की स्थापना हुई तब संसार में ढोंग, पाखंड, अंध विश्वास, अज्ञान और अविद्या चारों तरफ फैली हुई थी। महर्षि ने निरन्तर परिश्रम और पुरुषार्थ करके मानव समाज को वेद की राह पर चलाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी। लेकिन ये इतना बड़ा परिवर्तन ऐसे ही नहीं आ गया था क्योंकि परिवर्तन आता नहीं लाया जाता है। आज इस अवसर पर महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस को लेकर दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला जो निरंतर सफलतापूर्वक चल रही है। सभी कार्यक्रमों की वीडियो दिखाई गई और आर्य समाज द्वारा संचालित सेवा कार्यों का भी प्रस्तुतिकरण किया गया। जो नए निर्माण के कार्य हो रहे हैं, महर्षि दयानंद की मूवी का परिचय भी दिया गया, जिससे सभी लोग अभिभूत हो गए। दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने आर्य समाज द्वारा संचालित सेवा कार्यों का विधिवत वर्णन करते हुए बताया कि आने वाले समय में आर्य समाज पूरे देश और दुनिया में एक परिवर्तन की लहर चलाएगा। आर्य समाज द्वारा महर्षि की जयंती पर ज्ञान ज्योति पर्व महासंपर्क अभियान चलाया गया है, जिसमें 200 व्यक्तियों तक एक आर्य परिवार पहुँचेगा और आर्य समाज के सेवा कार्यों महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को उन तक पहुँच जाएगा।

149वें स्थापना दिवस के अवसर पर डॉ. महेश विद्यालंकार जी की पुस्तक 'आर्यसमाज के विचार' का विमोचन करते आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के अधिकारी

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगेंद्र खटटर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज हमारे गुरु दयानंद सरस्वती की विरासत है, हमारे पूर्वजों की प्रेरणा का फल है, जिसे हमें आगे बढ़ाना है, जो हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। आपने अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ और आर्य समाज के सेवा कार्यों से प्रेरणा लेते हुए कहा कि भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी 1965में जब देश के अंदर धर्मान्तरण एक बहुत बड़ी समस्या थी तब आर्य समाज से अपेक्षा की और 1968 में अखिल भारतीय सेवा श्रम संघ की स्थापना हुई। तब से लेकर अब तक उत्तर पूर्व के राज्यों में जहाँ आतंकवाद और नक्सलवाद एक बहुत बड़ी समस्या थी, वहां आर्य समाज लगातार सेवा के कार्य बालवाड़ी, गुरुकुल, विद्यालय, छात्रावासों के रूप में एक से बढ़कर एक सेवा कार्य कर रहा है। विपरीत परिस्थितियों में वहाँ पर वेद सम्मेलन और सेवा कार्यों के लिए दयानंद सेवा श्रम संघ को सम्मान भी प्राप्त हुए हैं। हमें अपने संगठन को और मजबूत करना है और आगे बढ़कर के नई नई सेवाओं को और बढ़ाना है।

– *जारी पृष्ठ 5 पर*

पृष्ठ 4 का शेष

इस क्रम में दिल्ली सभा के मंत्री श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी ने आर्य समाज द्वारा चलाए जा रहे स्वास्थ्य जागरूकता अभियान से परिचित कराते हुए उपस्थित आर्य जनों को बताया कि किस तरह से आर्य समाज सेवा बस्तियों में एम्बुलेंस और पूरी टीम ले जाकर गरीब व निर्धन लोगों का चौकअप करता है। स्वास्थ्य जाँच करता है, जिससे उनको एक बहुत बड़ी सहायता और सहयोग प्राप्त होता है और वे स्वस्थ रहते हैं, इसके लिए सभी ने इस सेवा कार्य की जयघोष कर सराहना की। आर्य केंद्रीय सभा के कोषाध्यक्ष श्री मनीष भाटिया ने आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा सिविल सर्विसेज की तैयारियों के लिए जो अद्भुत और अनुपम कार्य किया जा रहा है, उससे सभी लोगों का परिचय कराया। आपने बताया कि आर्य समाज के माध्यम से आई ए एस, आई पी एस और अन्य क्षेत्रों में उच्च पदों पर सेवा कार्य कर रहे हैं सह अपने आप में एक बडा कार्य है। इसके साथ ही आपने बताया कि आर्य समाज के माध्यम से हर वर्ष उन बच्चों को जो दसवीं बारहवीं पास कर के अभाव के कारण आगे नहीं बढ़ पाते उन्हें विशेष छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इस क्रम में 21 अप्रैल 2024 का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि 150 बच्चों को लगभग पचास लाख की छात्रवृत्ति प्रदान करने का कार्यक्रम रखा गया है। श्रीमती शालीनी आर्या द्वारा महिला सशक्तिकरण, महिला स्वरोजगार जैसे सेवा कार्यों का भी परिचय दिया गया। आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री बृहस्पति आर्य ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में टंकारा के सफल आयोजन में मोटर साइकिल यात्रा का वर्णन करते हुए देश की वर्तमान परिस्थितियों से अवगत कराया और बताया कि इस तरह से आर्य समाज को जागरूक होकर के युवा पीढ़ी को दिशा देनी चाहिए। आपने आर्य वीर दल द्वारा संचालित प्रशिक्षण शिविरों के विषय में विस्तार से बात करते हुए बताया कि आज दिल्ली में 200 से ज्यादा शाखाएं प्रतिदिन चलती हैं, जहाँ युवाओं को आगे बढ़ने का, सही रास्ते पर चलने का संदेश दिया जाता है। देश की वर्तमान चुनौतियों को देखते हुए आपने गले लगाइए, रिश्ते बचाइए, नशा हटाईये, प्राकृतिक खेती को अपनाईए और देश की एकता और अखंडता को कायम रखने के लिए युवा शक्ति को आर्य समाजों में सदस्य और अधिकारी बनाने की भी बात कही।

श्री कृपाल सिंह आर्य जी ने नव वर्ष की शुभकामनाएं देते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रमुख शिष्यों में से एक लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित स्वदेशी बैंक पीएनबी का जिक्र करते हुए बताया कि आर्य समाज ने हमेशा से अपने देश की गरिमा और गौरव को बढ़ाने का कार्य लगातार किया है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए आर्य समाज द्वारा महर्षि दयानंद को आपरेटिव अर्बन थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट सोसाइटी का गठन किया गया है। इसकी सदस्यता के लिए सबको आगे आना चाहिए और यह कार्य मानव सेवा का कार्य है। जो गरीब लोग हैं, उनको इससे समय-समय पर धन दिया जाएगा। श्री विनय आर्य जी ने ज्ञान ज्योति पर्व महासंपर्क अभियान को लेकर ज्ञान ज्योति एप्लीकेशन के विषय में विस्तार से बताया और कहा कि 2025 तक हम लाखों आर्य 200 व्यक्तियों तक पहुँचेंगे तो एक बड़ा समूह हमारे सामने होगा और 2025 में जब अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में आयोजित किया जाएगा, तब हम सब वहां कार्यकर्ता होंगे और हमारे संपर्क में आने वाले गैर आर्य समाजी आएंगे वो सब हमारे कार्यक्रमों को देखने आएंगे तो एक नए युग का निर्माण होगा और एक नया आर्य समाज का शंखनाद होगा। आर्य समाज एक नए परिवेश में एक नए तरीके से आगे बढ़ेगा और हमारे सेवा कार्य पूरे संसार में विस्तार को प्राप्त होंगे। इस क्रम में श्री राकेश आर्य जी ने आर्य समाज के सेवा कार्यों को किस तरह से हम आगे बढ़ाएँ बड़ी सरलता और सहजता से कम समय में अपने प्रेरक विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि मैंने विनय आर्य जी की प्रेरणा से जानें दयानंद को पुस्तक का स्वाध्याय किया और मुझे पता चला कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने हमें व्यवहार से लेकर के आचरण से लेकर के हर क्षेत्र में उन्नति प्रगति और सफलता का रास्ता दिखाया। वास्तव में यह पुस्तक अमृत है और इसको पढ़कर हम सब को अपने जीवन को गरिमा प्रदान करनी चाहिए। आपने सभी अधिकारियों के प्रति कृतज्ञता है और आभार व्यक्त किया। वेद परिवार निर्माण योजना की अभूतपूर्व सफलता का वर्णन करते हुए विनय आर्य जी ने बताया कि हमारी वेद परिवार निर्माण योजना काफी दिनों से चल रही है और उसके सैकड़ों परिवार सहभागी बन चुके हैं। आपने श्रीमती सुरेखा आर्या जी का परिचय कराते हुए बताया कि इस कार्य को आप लगातार आगे बढ़ा रहे हैं और अब तक सामवेद परिवार और अथर्ववेद परिवार पूरे हो चुके हैं ऋग्वेद और यजुर्वेद के परिवारों के लिए आप सम्पर्क करें और अपने परिवार में वेद के पढने-पढाने परम्परा को स्थापित करें। 2025 में जब अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन होगा तब ये सभी परिवार वेदपाठ करेंगे और इनको सम्मानित भी किया जाएगा। वक्ताओं के इस क्रम में आर्य केंद्रीय सभा की मंत्री श्रीमती सरोज यादव जी ने महिलाओं की पूर्व स्थिति के विषय में वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा महिलाओं का सम्मान और उत्थान किस तरह से हुआ इस पर गहराई से अपना चिंतन प्रस्तुत किया। आपने बताया कि महिलाएँ व्यक्ति परिवार और समाज को संस्कार प्रदान करती हैं, महिला निर्मात्री है, जिनके परिश्रम से समाज सक्षम और सफल होता है। आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति सुपूर्ण महिला जगत की और आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. मुकेश आर्य, सुरेन्द चौधरी, श्रीमती विभा आर्य अनेक अन्य वक्ताओं ने समय अभाव के कारण आर्य समाज के स्थापना दिवस और नव वर्ष की शुभकामनाऐं प्रदान की। इस अवसर पर डॉ. महेश विद्यालंकार की पुस्तक आर्य समाज के विचार का भी विमोचन किया गया।

– *सतीश चड्डा, महामन्त्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज कालीकट एवं महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउंडेशन का निरीक्षण

मुसलमानों ने यह शर्त रखी थी कि या तो हिन्दू मुस्लिम हो जाएँ नहीं तो मौत को गले लगाएँ। ऐसे विपरीत परिस्थितियों में आर्य समाज के निर्भीक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज आदि महापुरुषों ने वहाँ जाकर अपने लोगों को शुद्धि अभियान चलाकर पुनः वैदिक धर्म में वापसी कराई थी। आज वहाँ पर आर्य समाज का वेद रिसर्च फ़ाउंडेशन गतिशील है, जहाँ पर आचार्य एम. आर. राजेश जी लगातार आर्य समाज का प्रचार प्रसार और विस्तार कर रहे हैं। अभी पिछले दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, डॉ. वी. सिंह जी, श्री वी. के. चोपड़ा जी एवं श्रीमती मीनू अग्रवाल जी ने सभा द्वारा संचालित महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फाउंडेशन कोझिकोड (कालीकट) पहुँचे और वहाँ पर उन्होंने हवन में आहुति देते हुए विश्व मंगल की कामना की। इस अवसर पर कश्यप वेद रिसर्स फाउंडशेन में हुए कार्यक्रम में श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए आर्य समाज द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को लेकर दो वर्षीय आयोजनों का वर्णन करते हुए बताया कि 12 फरवरी 2023 से लेकर हमने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिन, आर्य समाज के स्थापना दिवस और अनेकानेक देश विदेश के सफल आयोजन किए हैं। आर्यसमाज ने टंकारा में महर्षि की 200वीं जयंती को सफलता पूर्वक मनाया, जिसमें स्वयं राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री जीने महर्षि दयानन्द के सेवा कार्यों को इस स्मरण करते हुए कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से नमन किया। अब आगे आर्य समाज का 150 वाँ स्थापना वर्ष और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वीं जयंती वर्ष चल रहा है, संपूर्ण आर्य जगत को, आर्य परिवारों को, आर्य प्रतिष्ठानों को 200 व्यक्तियों तक पहुंचने का संकल्प लेना चाहिए। इस अभियान को हमने ज्ञान ज्योति महासम्पर्क अभियान का नाम दिया है, इसके लिए आर्य समाज का साहित्य महर्षि दयानन्द की शिक्षाएं और आर्य समाज की ओर से निमंत्रण सबको दें और जन जन तक आर्यसमाज की शिक्षाओं को पहुँचाएं। आचार्य राजेश जी ने भी सभी आगंतुकों मनोभावों का आभार व्यक्त किया और इसके साथ ही आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस पर विशेष आयोजनों का संकल्प लिया। श्री विनय आर्य जी द्वारा लिखित पुस्तक परिवर्तन आचार्य जी को भेंट की गई। यह यात्रा अपने आप में अत्यंत सफल सार्थक सार्थक और सारगर्भित सिद्ध हुई।

साप्ताहिक स्वाध्याय

गंगा तट पर सिंहनाद

(सन् 1867 से 1869 के सितम्बर मास तक)

गतांक से आगे –

वह आश्चर्यान्वित हुआ और रुष्टता का कारण पूछने लगा। महर्षि जी ने उस समय जो उत्तर दिया, वह उनके सारे जीवन की चाबी है और प्रत्येक हृदय में अंकित करने योग्य सन्देश है। उत्तर निम्नलिखित था–

'मैं संसार को कैद कराने नहीं आया हूं वरन् कैद से छुड़ाने आया हूं। यदि वह अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता तो हम अपनी श्रेष्ठता को क्यों छोड़ें ?'

महर्षि जी की आज्ञा से तहसीलदार ने उस ब्राह्मण को रिहा कर दिया। अनूप शहर से प्रस्थान कर महर्षि जी अतरौली, जलेसर व गढ़िया, सोरों, पीलीभीत, शहबाजफर, ककोड़े घाट, नरोली, कायमगंज आदि में प्रचार करते हुए फर्रुखबाद पहुंचे। मार्ग में कई स्थानों पर शास्त्रार्थ और विचार हुए। प्रचार का अखण्ड क्रम जारी ही रहा। सोरों में पं० अंगद शास्त्री से शास्त्रार्थ हुआ। अंगद शास्त्री की इस प्रदेश में बड़ी मान्यता थी। वह उस घेरे के प्रधान मल्ल समझे जाते थे। अंगद शास्त्री ने देर तक शास्त्रार्थ करने के पीछे महर्षि जी के कथन की सत्यता स्वीकार की और अनुयायी बन गया। तब तो चारों ओर सुधार की बाढ़ आ गई। लोग धड़ाधड़ मूर्तियों का प्रवाह करने लगे। कण्ठियां टूटने लगी, भागवत के ग्रन्थ रद्दी की टोकरी में पहुंच गए और महर्षि जी का जयकार चारों ओर गूंजने लगा।

जब महर्षि जी शहबाजफर में थे, तब उन्होंने विरजानन्द जी के देहावसान का समाचार सुना। महर्षि जी को बड़ा दु:ख हुआ। वह अपने गुरु के बड़े भक्त और सच्चे शिष्य थे। उन्हें दण्डी जी के शिष्य होने का अभिमान था। समाचार सुनकर महर्षि जी के मुंह से हठात् ये शब्द निकले, **आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया!** महर्षि दयानन्द का व्याकरण के सूर्य के प्रति श्रद्धा–भाव यथार्थ ही था। महर्षि जी ने धर्म के लिए जो बड़ा कार्य किया, उसके लिए दण्डी जी का श्रेय कुछ कम नहीं है। यह ठीक है कि महर्षि दयानन्द में विद्या और अनुभव की सब ज्ञात्तिफयां विद्यमान थीं; परन्तु बीज को सींचनेवाला माली विरजानन्द ही था। दण्डी जी के स्वभाव के विषय में कई प्रकार की सम्मतियां हो सकती हैं–वह आदर्श नहीं था; दण्डी जी के हृदय में सुधार का सारा क्रम भी निश्चित रूप से विद्यमान नहीं था; परन्तु उनका अगाध पाण्डित्य, आर्ष ग्रन्थों में अभिरुचि और रूढ़ि को न मानने की प्रवृत्ति– ये ऐसे गुण थे, जिन्होंने योग्य शिष्य के हृदय में विद्यमान बीज को भली प्रकार सींचकर हरे–भरे कल्पद्रुम के रूप में परिणत कर दिया।

फर्रुखबाद में महर्षि जी बहुत दिनों तक रहे। वहां भी बड़े बल से कुरीतियों का खण्डन किया गया, और द्विजों को यज्ञोपवीत तथा गायत्री मन्त्र प्रदान किया गया। पण्डित गोपाल, जिसका साहस योग्यता की अपेक्षा सैकड़ों गुणा अधिक था, शास्त्रार्थ करने के लिए आया। बेचारा शास्त्रार्थ–गुरु से क्या टक्कर लेता? शास्त्रार्थ में पराजित हुआ, परन्तु साहस ने उसका साथ न छोड़ा। वह भागा हुआ बनारस गया और कुछ धन राशि दे दिलाकर सुरती और सुंघनी के उपासकों से मूर्तिपूजा के पक्ष में व्यवस्था ले आया। वह व्यवस्था फर्रुखबाद में डंके की चोट में सुनाई गई, परन्तु असर कुछ भी न हुआ, होता भी कैसे? सब लोग व्यवस्था का मूल्य जानते थे– अरे का है? महाराज! यह एक मोहर है और हस्ताक्षरों के लिए एक व्यवस्थापत्र है। अरे का लिखलवा है? महाराज, मूर्तिपूजा का समर्थन किया है। महामहोपाध्याय ने मोहर को अण्टी में दबाया, सुंघनी की एक चुटकी नाक में दी और लाई कहकर व्यवस्थापत्र मांग लिया। लिखने की सामग्री हस्ताक्षर कराने वाला साथ लाता था। उसने कलम महा महोपाध्याय जी के हाथ में पकड़ा दी। अब देर क्या थी! कलम उठाई। पत्र पढ़ने की फुर्सत कहां? नीचे हस्ताक्षर कर दिये। प्रजा के धर्म का निर्णय हो गया। इससे पण्डित महाराजों को कोई मतलब नहीं कि व्यवस्था में क्या लिख है।

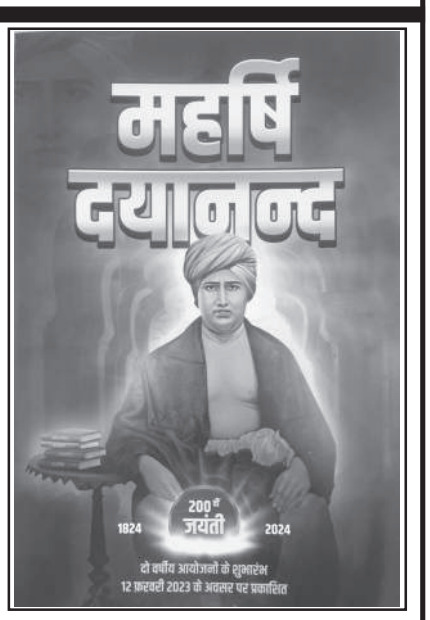

व्यवस्था का भी कुछ प्रभाव न होता देख, ब्राह्मणों तथा तान्त्रिकों ने कानपुर से पण्डित हलधर ओझा को बुलाया। पण्डित हलधर ओझा व्याकरण के अच्छे पण्डित थे। उन्हें धर्म के विषय में कुछ अधिक ज्ञान नहीं था। शास्त्रार्थ का विषय और था, पर ओझा जी उसे व्याकरण में खींच ले गए।

– क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Fight Against the Garh (Strong Base)

Debate was started. It was named as Shastrarth (debate), but actually it was a big struggle against a mob. Each Pandit was trying his best to defeat Swamiji, but Swamiji having been ready for any question, could not be overpowered. Study and practice of so many years, many qualities, due to Brahmacharya, like fearlessness, patience, good memory etc helped him a lot. Questions were being put one after the other, Swamiji answered readily and showed his ability. His answers were making the opponents astonished and disturbed.

Pandit Taracharan asked, "How do you recognise Manusmariti belongs to Vedas?

Swamiji replied, "Brahman of Samved has clarified that whatever man has said, is a great medicine."

Tara charan was satisfied Swami Vishudhanand spoke not a shlok and asked Swamiji to prove it belongs to Ved.

Swamiji replied, "This is out of context"

Swami Vishudhanand said, "But if you know about it, tell us"

Swamiji said, "It can be answered after looking at the previous part of it."

Swamiji Vishudhanand, "If you do not remember every topic, why have you come for debate in Kashi?"

Swamiji Dayanand, "Have your learnt every sutra by heart?

Swami Vishudhanand, "Yes I have learnt every Sutra"

This answer helped Swami Dayanand and he asked, "How many rules of Dharm are there?"

Swami Vishudhanand did not know the Shlokes have 10 rules of Dharm. Then swamiji speak out the Sholak that describes 10 rules. Then famous Dharmacharya Pandit Bal Shastri said, "I have studied full literature regarding Dharm. You may ask whatever you want."

"Swamiji Dayanand "Tell the rules of Adharm."

Bal Shastri was silent. He had never thought of rules of Adharm.

Period of questions and answers moved on. Pandits of Kashi placed their views about Idol worship. It was said that the word 'Pratima' has been used in Vedas. It means 'Idol'. Secondly in 'Udbudhyaswagne' Mantra 'Purta' word means 'Idol worship' Swamiji clarified both. He said, There is clear of Idol making of Ishwar. 'Purta' represent 'River' or 'Pool'. Then he repeatedly mentioned in Vedas.

When all the Pandits were sure that they had been defeated, they thought of a trick. Leaving aside the topic of Vedas, they started debate on subjects of Puranas. But they began to feel soon that their trick had also failed, Swamiji started questions about Vyakran, none of them could give satisfactory answer. The were irritated and disappointed. Then Madhvacharyaji moved forward. He placed two papers in the middle of the crowd and said , "It is clearly written there that the Yajman should read Puranas 10 days after completing Yajna. Now Tell us what for has the word 'Puran' been used?"

Swamiji, "Please read out complete topic."

Vishudhanand handed over the papers to Swamiji and said "Please read it yourself."

Swamiji "Please read it yourself."

Vishudhanand "I can not read without glass (spectacles), So you will have to read." Swamiji took hold of the papers. It was dark due to night. So deepak was brought light of the deepak was very dim. So it took some to read the paper. Team of Pandits found it a good chance to stand up. Seeing this trick Swamiji caught Vishundanand by hand and said, "sit down for some time. Leaving the stage without final result being declared, it is not proper for wise people like you." But he did not get ready to sit. He moved his hand on Swamiji's back and said, "Please sit down. What was expected has happened getting sign from the Pandit Kashi Naresh Ishwari Narayan Singh also stood up and started clapping. As per planning made already all the people stood up together chanting 'Santan Dharm ki Jai' Kotwal was a very nice man.

To be Continue.....

पृष्ठ 2 का शेष

क्या ब्रिटिश राज ....

जबकि पुलिस-प्रशासन के हाथ यह जानकारी लग चुकी थी कि इन अपराधों के पीछे पाकिस्तानी हैं। लेकिन रॉदरहैम की पुलिस और दूसरे अफ़सर कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। उन्हें यह भी डर था कि कार्रवाई होने पर दो समुदायों के बीच तनाव हो सकता है, नतीजा यह निकला कि एक तरह से पाकिस्तानियों को मनमानी करने की छूट मिल गई।

मामले बढ़ते चले गये 9 मई साल 2012 में डेक्कन हेराल्ड में खबर छपी कि '50 गोरी ब्रिटिश लड़कियों से रेप के आरोप में पाकिस्तानी ग्रूमिंग गैंग को जेल' मामला काफी ओपन हो चुका था, न्याय के लिए ब्रितानी लोग सड़कों पर थे। सरकार पर दबाव था इसके बाद 2013 में एक महिला अधिकारी एलेक्सिस जे को मामले की स्वतंत्र जांच का जिम्मा दिया गया। वह स्कॉटिश सरकार की चीफ सोशल अडवाइजर की जिम्मेदारी निभा चुकी थी। उसने अपनी रिपोर्ट में बताया कि काफी तैयारी के बाद एक लड़की सबूत देने को तैयार हुई, लेकिन पुलिस स्टेशन पहुंचने से पहले ही उसके मोबाइल पर एक मेसेज आया। ये मेसेज उन्हीं लोगों ने भेजा था, जिन्होंने इतने दिनों तक उसका रेप किया। उन लोगों ने खुलेआम धमकी दी थी कि उस लड़की की छोटी बहन उनके पास है। बताने की ज़रूरत नहीं कि वे सबूत फिर पुलिस के पास नहीं पहुंचे।

मसलन सब कुछ फ़िल्मी अंदाज में चल रहा था। ब्रिटिश नेताओं को डर था सियासी नुकसान का, पुलिस अपनी छवि को लेकर परेशान थी। इस तरह अपराध करने वालों को पूरा मौका मिल रहा था जबकि आधुनिक इतिहास की यह पहली घटना है, जहां इतने बड़े पैमाने पर योजनाबद्ध तरीके से बलात्कार को अंजाम दिया गया। मानो यह कोई मिशन हो और निशाने पर हों ब्रितानी लड़कियां ये मामले ब्रितानी अख़बारों से लेकर मीडिया की सुर्खियाँ बन रहे थे। एक तरफ जहाँ पाकिस्तानियों पर आरोप तय हो रहे थे वहां दूसरी ओर मामले दोहराए जा रहे थे। एक वामपंथी सांसद ने भाषण दिया कि इस मामले को तूल देकर कुछ लोग ब्रिटेन के बहुसांस्कृतिक ढांचे को हिलाना चाहते हैं। यानि दंगों बयान की आड़ में ये दंगों की धमकी कहो या चेतावनी थी।

जब ये सब हुआ तो फ़ोर्ब्स में एक लेख छपा और पूछा कि "ब्रिटिश पुलिस ने 1,400 रॉदरहैम बच्चों के साथ दुर्व्यवहार करने वाले पाकिस्तानी गिरोहों की उपेक्षा क्यों की?" जबकि बड़े पैमाने पर बाल शोषण की एक कहानी सामने आ रही है।

मामलों को दबाया जाने लगा। किन्तु 10 दिसम्बर 2017 को 'दि वीक' में फिर एक खबर छपी कि 'ब्रिटेन में गोरी लड़कियों को नशीला पदार्थ देकर रेप करते पाकिस्तानी मूल के सेक्स गिरोह'

जब ब्रितानी लड़कियों के शिकार शोषण तस्करी की कहानी गूंजने लगी तब अचानक 27 नवम्बर साल 2018 में एक खबर ने मानों फिर से तहलका मचा दिया। ये खबर 'डेली मेल' के हवाले से 'इंडियन एक्सप्रेस' में छपी थी जिसका शीर्षक था 'ब्रिटिश सिख लड़कियों का यौन शोषण कर रहे हैं पाकिस्तानी'। डेली मेल के अनुसार युवा सिख महिलाओं को ग्रूमिंग जिहाद का शिकार बनाने में पाकिस्तानी ग्रूमिंग गिरोहों का हाथ मिला। विडम्बना ये देखिये कि खालिस्तान का नाम लेकर खुद को सिख बताने वाले वो संगठन जो बार-बार इंडियन हाई कमीशन के बहार बवाल मचाते है एक बार भी इन सिख बच्चियों के लिए पाकिस्तान हाई कमीशन के बाहर नहीं गये। जबकि उस दौरान ब्रिटेन में 'गेट आउट पाकिस्तान' अभियान बड़े स्तर पर चल रहा था और करीब 12 ब्रितानी लड़कियों से रेप के जुर्म में 20 पाकिस्तानियों को जेल हुई थी। उनमें से सभी पीड़िताएं किशोर उम्र की थीं। सभी को नशा दिया था। किसी लड़की को कार पार्किंग में ले जाकर तो किसी को वीरान इलाके में ले जाकर बलात्कार का शिकार बनाया गया था।

देखा जाये तो लंदन का तेजी से बढ़ता मजहबीकरण लगभग पूरा हो गया है, राजधानी में सैकड़ों आधिकारिक शरिया अदालतें चल रही हैं, और मस्जिदें खुल रही हैं। मौलाना सैयद रज़ा रिज़वी जैसे लोग है जो अब खुलेआम लंदनिस्तान बनाने की घोषणा कर रहे हैं। क्योंकि लंदनिस्तान, 423 नई मस्जिदों के साथ, ईसाई धर्म के चर्च के खंडहरों पर बनाया जा रहा है या लंदन में कई प्रतिष्ठित ईसाई चर्चों को मस्जिदों में बदल दिया गया है। गेटस्टोन इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट: हयात यूनाइटेड चर्च को मिस्र समुदाय द्वारा मस्जिद में परिवर्तित करने के लिए खरीदा गया था। सेंट पीटर चर्च को मदीना मस्जिद में बदल दिया गया है। ब्रिक लेन मस्जिद एक पूर्व मेथोडिस्ट चर्च पर बना गई थी। न केवल इमारतें परिवर्तित होती हैं, बल्कि लोग भी परिवर्तित होते हैं। इस्लाम में धर्मान्तरित होने वालों की संख्या दोगुनी हो गई है, जिनमें लगभग आधे ब्रिटिश मुसलमान 25 वर्ष से कम आयु के हैं, नेशनल सेक्युलर सोसाइटी के निदेशक कीथ पोर्टिस वुड ने पिछले दिनों आगाह करते हुए कहा था- अगले 20 वर्षों में चर्च जाने वालों की तुलना में मुसलमान ज्यादा हो जायेंगे। क्योंकि 2001 के बाद से, सभी संप्रदायों के 500 लंदन चर्चों को निजी घरों में बदल दिया गया है। इसी अवधि के दौरान, ब्रिटिश मस्जिदों का प्रसार हो रहा है, 2012 और 2014 के बीच, खुद को एंग्लिकन के रूप में पहचानने वाले ब्रितानियों का अनुपात 21 प्रतिशत से गिरकर 17 प्रतिशत हो गया, यानी 1.7 मिलियन लोगों की कमी हुई, जबकि, प्रतिष्ठित नेटसेन सोशल रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, मुसलमानों की संख्या में लगभग एक मिलियन की वृद्धि हुई है। जिस ब्रिटेन को कभी आधी दुनिया पर राज करने या उनके राज में सूरज ना डूबने के परिचय से जाना था, आज उस ब्रिटेन के शहर शरिया अदालतों के अड्डे बन गये है। अगर अभी को ई कठोर फैसला ना लिया तो आगे आने वाले दिनों में ब्रिटेन का सूरज अस्त दिखाई देगा? - ***सम्पादक***

पृष्ठ 3 का शेष

अशिक्षित भारत को शिक्षा का ....

थी। एक ईश्वर में विश्वास, मूर्ति पूजा और जाति व्यवस्था छुआछूत को खारिज करने के उपदेश थे।

बस यही से हंसराज जी को एक राह मिली कि विद्यालय न होने के कारण हजारों बच्चे अनपढ़ रह जाते है कुछ ऐसा किया जाये जिससे देश का भविष्य शिक्षित हो। 30 अक्तूबर1883 दीपावली की रात स्वामी दयानंद सरस्वती जी का निर्वाण हुआ था, उनके देहावसान के बाद लाहौर के आर्य समाज से जुड़े लोग ऋषि भक्त उनकी स्मृति में कुछ काम करना चाहते थे, तो अंग्रेजी के साथ-साथ अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति की शिक्षा देने वाले विद्यालय खोलने की चर्चा चली। 22 वर्षीय हंसराज जी जिन्होंने उच्च अंकों के साथ बीए पास किया था। और आसानी से बड़े पद सरकारी सेवा में नौकरी पा सकते थे, किन्तु बिना किसी वेतन के एक गैर-मौजूद स्कूल में हेडमास्टर का पद स्वीकार करने का फैसला किया।

हंसराज जी के समर्पण को देखकर उनके बड़े भाई मुलकराज जी ने उन्हें 40 रु0 प्रतिमाह देने का वचन दिया। अगले 25 साल हंसराज जी डी.ए.वी. स्कूल एवं कालेज लाहौर के अवैतनिक प्राचार्य रहे। शिक्षा के प्रति ऐसे समर्पित महात्मा को दुनिया में दूसरा उदहारण विरला ही मिलेगा। जिसने जीवन भर बच्चों को पढाया हो लेकिन कोई पैसा नहीं कमाया। कोई भूमि उन्होंने अपने लिए नहीं खरीदी, तो मकान बनाने का प्रश्न ही नहीं उठता था। पैतृक सम्पत्ति के रूप में जो मकान मिला था, धन के अभाव में उसकी वे कभी मरम्मत भी नहीं करा सके। उनके इस समर्पण को देखकर यदि कोई व्यक्ति उन्हें कुछ नकद राशि या वस्तु भेंट करता, तो वे उसे विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर देते थे। संस्था के कार्य से यदि वे कहीं बाहर जाते, तो वहाँ केवल भोजन करते थे। बाकि का खर्च वे अपनी जेब से करते थे। इस प्रकार मात्र 40 रु0 में उन्होंने अपनी माता, पत्नी, दो पुत्र और तीन पुत्रियों के परिवार का खर्च चलाया। आगे चलकर उनके पुत्र बलराज ने उन्हें सहायता देने का क्रम जारी रखा।

रविवार को वह लड़कों को रावी के किनारे ले जाते और उनके साथ दिन बिताते उन्होंने उनमें "विद्या, धर्मपरायणता और देशभक्ति" के आदर्श स्थापित करते स्वदेशी शब्द के प्रचलन में आने से बहुत पहले, उन्होंने खादी कुर्ता और पायजामा पहनना शुरू कर दिया था और अपने सिर के चारों ओर एक ढीली पगड़ी लपेट ली थी। उनके कार्यालय में कोई कुर्सी नहीं थी: वह एक पुरानी शैली की मेज के साथ फर्श पर बैठते थे, जिस पर वे लिखते थे।

इतने कठिन परिश्रम और साधारण भोजन से उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। एक बार तो उन्हें क्षय रोग हो गया। लोगों ने उन्हें अंग्रेजी दवाएँ लेने की सलाह दी, पर उन्होंने आयुर्वेदिक दवाएँ ही लीं तथा उसी से वे ठीक हुए। इस दौरान तीन माह तक केवल गुड़, जौ का सत्तू और पानी का ही सेवन किया। धनाभाव के कारण उनकी आँखों की रोशनी बहुत कम हो गयी। एक आँख तो फिर ठीक ही नहीं हुई, पर वे विद्यालयों के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। उनकी यह लग्न देखकर लोगों ने उन्हें 'महात्मा' की उपाधि दी।

समाज सेवा में अपना जीवन समर्पित करने के बाद भी वे बहुत विनम्र थे। यदि उनसे मिलने कोई धर्मोपदेशक आता, तो वे खड़े होकर उसका स्वागत करते थे। वे सदा राजनीति से दूर रहे उन्हें बस वेद-प्रचार की ही लग्न थी। उन्होंने लाहौर में डी.ए.वी. स्कूल, डी.ए.वी. कालेज दयानन्द ब्रह्म विद्यालय, आयुर्वेदिक कालेज महिला महाविद्यालय, औद्योगिक स्कूल, आर्य समाज अनारकली एवं बच्छोवाली, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं हरिद्वार में वैदिक मोहन आश्रम की स्थापना की।

देश, धर्म और आर्य समाज की सेवा करते हुए 14 नवम्बर, 1938 को महात्मा हंसराज जी ने अन्तिम साँस ली। रात 11 बजे उन महान आत्मा का शरीर निढाल हो गया, उनके बेटे, बेटियां, पोते-पोतियां और असंख्य दोस्त उनके आसपास थे। उनका पार्थिव शरीर डीएवी कॉलेज लाया गया। समाज के सभी क्षेत्रों और समुदायों से हजारों-हजारों लोग उन्हें श्रद्धांजलि देने आए। उनका अंतिम संस्कार जुलूस, जो अनारकली से होकर गुजरा, अब तक देखा गया सबसे बड़ा जुलूस था। इसे श्मशान में नहीं बसाया जा सकता था, अंतिम संस्कार रावी के तट पर किया गया। उनके पढ़ाये छात्रों तथा अन्य प्रेमीजनों ने उनकी स्मृति में लाहौर, दिल्ली, अमृतसर, भटिंडा, मुम्बई, जालन्धर आदि में अनेक भवन एवं संस्थाएँ बनायीं, जो आज भी उस अखंड कर्मयोगी का स्मरण दिला रही हैं। दिल्ली में जिस हंसराज कॉलेज का नाम हमने आरम्भ में बताया इन्ही महात्मा महापुरुष भारत के महान सपूत के नाम पर रखा गया है। उनकी जयंती पर आर्य समाज का शत-शत नमन। - ***राजीव चौधरी***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 अप्रैल, 2024 से रविवार 21 अप्रैल, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 18-19-20/04/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 अप्रैल, 2024

चलो अमेरिका! ।।ओ३म्।। अमेरिका चलो!!

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्य समाज स्थापना वर्ष पर देश-विदेश में दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्त्वावधान में

प्रतिष्ठा में,

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अमेरिका

18-19-20-21 जुलाई, 2024 : न्यूयार्क (अमेरिका)

सम्माननीय भाईयो-बहिनो! जैसा कि आप जानते ही हैं कि सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए वर्तमान समय अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास से भरा हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में देश विदेश में भव्य और विराट आयोजन सफलतापूर्वक निरन्तर हो रहे हैं। इस क्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन न्यूयॉर्क में किया जा रहा है। इस अवसर पर समस्त आर्यजनों से हमारा अनुरोध है कि -

विदेशों में रहने वाले महानुभाव
भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में रहने वाले समस्त आर्य महानुभाव अमेरिका सम्मेलन में भाग लेने हेतु सपरिवार पधारें।

अमेरिका में रहने वालों को दें निमन्त्रण
आर्यजन स्वयं सपरिवार पहुँचे तथा अमेरिका में रहने वाले पारिवारिक जनों और मित्रों को निमंत्रण देकर आने का अनुरोध अवश्य करें

सभा की ओर से आमन्त्रण भेजें
सभा की ओर से आमन्त्रण भिजवाने के लिए विदेश प्रवासी आर्यजनों के नाम, पता एवं सम्पर्क सूत्र 9650183339 पर व्हाट्सएप करें

ऐतिहासिकता के बनें साक्षी

न्यूयार्क में आर्यों का मेला लगेगा, महर्षि दयानन्द का गुणगान किया जाएगा, यह कार्यक्रम अत्यन्त प्रेरक और ऐतिहासिक होगा, जिसके हम सब साक्षी बनेंगे। भारत से महासम्मेलन में सम्मिलित होने वाले समस्त महानुभावों के लिए पंजीकरण कराना अनिवार्य है। आप भी अपना पंजीकरण शीघ्र कराएं। अमेरिका महासम्मेलन, पंजीकरण, टूर पैकेज/कार्यक्रम और वीजा आदि की जानकारी/सहयोग प्राप्त करने के लिए श्री सन्दीप आर्य जी 91-9650183339 को व्हाट्सएप्प करें। विदेश में रहने वाले अपने परिजनों का नाम, पता और सम्पर्क सूत्र भी इसी मोबाईल नं. पर नोट कराएं/व्हाट्एप्प करें।

अमेरिका यात्रा एवं टूर पैकेज की जानकारी के लिए दिया गया कोड स्कैन करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह